Lecture Series No:- 72.

Online class on
Date - 21/12/2022,
Day - Wednesday
Time - 10:50 to 11:40

Topic,

Dr. Sunita Kumari
Depart. of Philosophy.
B.A part - II
paper - CS5
A. N. D. College Shahpur
Patory, Samastipur.

(1) Purusarthas.

Ans:- पुरुषार्थ शब्द दो शब्दों के योग से बना है -
पुरुष + अर्थ। पुरुष शब्द आत्मा का पर्यायवाची माना जाता है और (पुरुषार्थ) पुरुष अर्थ से हमारा तात्पर्य उद्देश्य होता है। इस प्रकार पुरुषार्थ शब्द End या good का पर्यायवाची शब्द माना जा सकता है। भारतीय आचार दर्शन में जीवन के भिन्न - भिन्न पक्ष को ध्यान में रखकर पुरुषार्थ की संख्या चार माना गया है, जिन्हें हम क्रमशः अर्थ (Wealth), काम (Enjoyment) धर्म (Vir (Virtues) Virtues. मोक्ष (Salvation or Liberation) कहते हैं। इन चार पुरुषार्थ को दो वर्गों में रखा जा सकता

P.T.O.

है। प्रथम तीन पुरुषार्थ साधन के रूप में पुरुषार्थ माने जाते है, किन्तु मोक्ष पुरुषार्थ परम पुरुषार्थ माना जाता है। जिसके लिए अंग्रेजी शब्द Summum Bonum या Supreme Good का प्रयोग किया जाता है।

इन चारों पुरुषार्थ की व्याख्या अपेक्षित है। सबसे पहला पुरुषार्थ है- अर्थ या Wealth।

1.) अर्थ (Wealth): अर्थ शब्द का प्रयोग भी भिन्न-भिन्न अर्थों में किया जाता है। किन्तु भारतीय आचार दर्शन के क्षेत्र में अर्थ से हमारा तात्पर्य उन भौतिक साधनों से है जिनके आधार पर हम जीवन-यापन कर पाते है। क्या हम आर्थिक दृष्टि से भौतिक साधनों का अर्जन कर सकते

P.T.O.

है ? तो इस अर्जन के संबंध में कुछ सीमा है। कुछ वे प्रश्न हैं जिनको समझना मूलतः अर्थ की नैतिकता (Morality of Wealth) है। यह सर्वविदित है कि जहाँ पूँजीवाद के समर्थक यह मानते हैं कि व्यक्ति को असीमित धन अर्जन का अधिकार है वहीं दूसरी ओर साम्यवाद के समर्थक अर्थ के ऊपर व्यक्ति की असीमित धन अर्जन का अधिकार है। वहीं दूसरी ओर साम्यवाद के समर्थक अर्थ के ऊपर व्यक्तिगत नियंत्रण को बिल्कुल अनैतिक मानते हैं।

भारतीय नैतिक व्यवस्था में अर्थ के महत्व को अंगीकार किया है, किन्तु कहीं न कहीं तो पूँजीवादी

के समर्थक अर्थ के ऊपर व्यक्तिगत नियंत्रण को बिल्कुल अनैतिक मानते हैं।

भारतीय नैतिक व्यवस्था में अर्थ को महत्व मानी इस तरह नैतिक व्यवस्था

END